संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०१९
वर्ष : २९ अंक : ४ (निरंतर अंक : ३२२)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

विद्यार्थी विशेषांक

जगदीश्वर की मुलाकात का पाठ पढ़ लें...

– पूज्य बापूजी ४

हे विद्यार्थी ! तू भारत का भविष्य, विश्व का गौरव और अपने माता-पिता की शान है । परमात्म-चेतना और गुरुतत्त्व-चेतना का सहयोग लेता हुआ तू सेवा और शुद्ध प्रेम से आगे बढ़ता जा... समय का सदुपयोग जितने ऊँचे कार्यों में करोगे, उतना ही लाभ ज्यादा होगा व ऊँचे-में-ऊँचे कार्य परमात्मप्राप्ति में समय लगाओगे तो स्वयं परमात्मरूप होने का सर्वोच्च लाभ भी पा सकोगे । ॐ ॐ ॐ... – पूज्य बापूजी

...तो आपकी योग्यता में चार चाँद लग जायेंगे २०

...तो कठिन का बाप भी तुम्हारे आगे सरल हो जायेगा ७

गौ-प्रेम से जुड़े पूज्य बापूजी के हृदयस्पर्शी प्रसंग
जानिये कत्लखाने जा रही गायों की कैसे की रक्षा १४

स्वास्थ्य के लिए वरदान है गौशाला की भूमि में बोया अनाज ३३

पूज्य बापूजी के सामर्थ्य व अम्माजी की निष्ठा का प्रभाव २१

आखिरी श्वास तक पूज्य बापूजी के श्रीचित्र को देखते-देखते भगवद्-तत्त्व में विलय हुए श्री गुरुबख्शराय जैसिंघानी को ब्रह्मांजलि २८
जन्म दिनांक : ८ दिसम्बर १९४६
निर्वाण दिनांक : ४ सितम्बर २०१९

आत्मदीया जगाने का पर्व : दीपावली १२
आरोग्य व लक्ष्मी प्राप्ति हेतु ३४

भोजन में उपयोगी बर्तनों का स्वास्थ्य पर प्रभाव ३०

अंतरात्मा में सुखी रहो और सुखस्वरूप हरि का प्रसाद बाँटो

- पूज्य बापूजी

भारतीय संस्कृति कहती है :

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु । सर्वः सद्बुद्धिमाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु ।।

सर्वस्तरतु दुर्गाणि... हम सब अपने-अपने दुर्ग से, अपने-अपने कल्पित दायरों से, मान्यताओं से तर जायें । **सर्वो भद्राणि पश्यतु...** हम सब मंगलमय देखें । **सर्वः सद्बुद्धिमाप्नोतु...** हम सबको सद्बुद्धि प्राप्त हो । बुद्धि तो सबके पास है । पेट भरने की, बच्चे पैदा करने की, समस्या आये तो भाग जाने की, सुविधा आये तो वहाँ डेरा जमाने की बुद्धि... इतनी बुद्धि तो मच्छर में भी है, कुत्ता, घोड़ा, गधा, मनुष्य - सभीमें है लेकिन हमारी संस्कृति ने कितनी सुंदर बात कही ! हम सबको सद्बुद्धि प्राप्त हो ताकि सत्य (सत्यस्वरूप परमात्मा) में विश्रांति कर सकें । **सर्वः सर्वत्र नन्दतु...** सभी हर जगह आनंद से रहें । हम सब एक-दूसरे को मददरूप हों ।

तो उत्तम साधक को उचित है कि अपने से जो छोटा साधक है उसको आध्यात्मिक रास्ते में चलने में मदद करे और छोटे साधक का कर्तव्य है कि उत्तम साधक, ऊँचे साधक का सहयोग करे । जो ज्ञान-ध्यान में छोटा है वह साधक सहयोग क्या करेगा ? जैसे सद्गुरु ज्ञान-ध्यान में आगे हैं और शिष्य छोटा साधक है । वह सद्गुरु की सेवा कर लेता है... अपने गुरु मतंग ऋषि के आश्रम में शबरी बुहारी कर देती है तो मतंग ऋषि का उतना काम बँट जाता है और वे आध्यात्मिकता का प्रसाद ज्यादा बाँटते हैं... तो सद्गुरु की सेवा करनेवाले शिष्य भी पुण्य के भागी बनते हैं । इस प्रकार छोटे साधक सेवाकार्य को और आगे बढ़ाने में ऊँचे साधकों को मददरूप बनें ।

जो सेवा में रुचि रखता है उसीका विकास होता है । आप अपना व्यवहार ऐसा रखो कि आपका व्यवहार तो हो एक-दो-चार दिन का लेकिन मिलनेवाला वर्षों तक आपके व्यवहार को सराहे, आपके लिए उसके हृदय से दुआएँ निकलती रहें । स्वयं रसमय बनो, औरों को भी रसमय करो । स्वयं अंतरात्मा में सुखी रहो और दूसरों के लिए सुखस्वरूप हरि के द्वार खोलने का पुरुषार्थ करो । स्वयं दुःखी मत रहो, दूसरों के लिए दुःख के निमित्त मत बनो । **न फूटिये न फूट डालिये । न लड़िये न लड़ाइये, (अंतरात्मा-परमात्मा से) मिलिये और मिलाइये (औरों को मिलाने में सहायक बनिये) ।**

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २९ अंक : ४ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३२२
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०१९
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
आश्विन-कार्तिक वि.सं. २०७६

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
७९३९८७७७१४ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस विद्यार्थी विशेषांक में...

❖ समय रहते उनसे जगदीश्वर की मुलाकात का पाठ पढ़ लें... ४
❖ सर्व सफलताओं का मूल : आत्मविश्वास ७
✻ ...तो कठिन का बाप भी तुम्हारे आगे सरल हो जायेगा
❖ उनका योगक्षेम सर्वेश्वर स्वयं वहन करते हैं ८
❖ आत्म खोज ✻ शक्ति, सौंदर्य, आनंद और जीवन का मूल कहाँ ? १०
- स्वामी रामतीर्थजी
❖ जो संकेत पाकर भी नहीं सुधरते उनका यही हाल होता है ! ११
❖ पर्व मांगल्य ✻ आत्मदीया जगाने का पर्व : दीपावली १२
लक्ष्मीप्राप्ति हेतु विशेष मंत्र : पृष्ठ ३४
❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १४
✻ गौ-प्रेम से जुड़े पूज्य बापूजी के कुछ प्रेरणाप्रद हृदयस्पर्शी प्रसंग
❖ योग-वेदांत-सेवा ✻ ...तो वह कर्म बंधन से छुड़ानेवाला हो जाता है १७
❖ विद्यार्थी संस्कार ✻ वह एक दिन जरूर ऊँचाई को छूता है जो... १८
✻ ध्यानपूर्वक सत्संग सुनो और विजेता बनो
✻ विश्वभर में चल रहे हैं ऐसे हजारों 'बाल संस्कार केन्द्र'
❖ तेजस्वी युवा ✻ ...तो आपकी योग्यता में चार चाँद लग जायेंगे २०
❖ महिला उत्थान २१
✻ पूज्य बापूजी के सामर्थ्य व अम्माजी की निष्ठा का प्रभाव
❖ हमारी संस्कृति एवं परम्पराएँ ✻ ईश्वर एक या अनेक ? २२
❖ तत्त्व दर्शन ✻ ब्रह्मविचार की प्रक्रिया (क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विवेक) २३
❖ स्वामी श्री लीलाशाहजी के सान्निध्य में... २४
❖ ...तो सारा जीवन ही व्यर्थ हो जायेगा २५
❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
❖ काव्य गुंजन ✻ ब्रह्मचर्य, संयम है बड़ा निराला - साक्षी २७
✻ दीप उसीसे जगायेंगे... - मा. पांडेय
❖ हम श्रद्धांजलि नहीं, ब्रह्मांजलि देते हैं २८
❖ 'डी' ग्रेड से पहुँची स्वर्ण पदक पाने तक ! - गीतांजलि कुमारी २९
❖ स्वास्थ्य संजीवनी ✻ भोजन में उपयोगी बर्तनों का स्वास्थ्य पर प्रभाव ३०
✻ शीत ऋतु में स्वास्थ्य-संवर्धन हेतु ✻ ब्रह्ममुद्रा
❖ अनमोल कुंजियाँ ✻ लक्ष्मीजी की प्रसन्नता के लिए... ३४
✻ ग्रहपीड़ा से रक्षा तथा आरोग्य व लक्ष्मी प्राप्ति हेतु
✻ लक्ष्मी किसको सताती है, किसको सुख देती है ?

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

॥ईश्वर॥	DIGIANA DIVYA JYOTI	मंगलमय इंटरनेट चैनल	TAKE 1 PRARTHANA
रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि १०-०० बजे	www.ashram.org/live	रोज सुबह ७ व रात्रि ९ बजे

✻ 'ईश्वर' टी.वी. चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. १०६८), डिश टी.वी. (चैनल नं. १०५७), विडियोकॉन (चैनल नं. ४८८) तथा जीटीपीएल, डेन, फास्टवे, हाथवे, इन डिजिटल आदि केबलों एवं 'Jio Tv' एंड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
✻ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। ✻ 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

Download Rishi Prasad Official, Rishi Darshan & Mangalmay Official Apps

शक्ति, सौंदर्य, आनंद और जीवन का मूल कहाँ ?

– स्वामी रामतीर्थजी

एक प्रेमी अपनी प्रेयसी की उत्कंठा में सूखकर काँटा हो गया। जिस देश में वह रहता था, वहाँ के राजा ने एक दिन उस युवक और उसकी प्राणेश्वरी को अपने पास बुलवाया। राजा ने देखा कि नारी बड़ी ही कुरूपा है। राजा ने फिर अपने दरबार को सुसज्जित करनेवाली अनेक सुंदरियों को उस प्रेमी युवक के सामने बुलवाया और उससे कहा : ''इनमें से किसीको पसंद कर लो।''

युवक ने कहा : ''महाराज ! आप जानते हैं, प्रेम मनुष्य को निरा अंधा कर देता है। राजन् ! आपके नेत्र नहीं हैं कि उसे देख सकें। मेरी आँखों से इसे (मेरी प्यारी को) आप देखिये, तब बताइये कि यह सुरूपा है कि कुरूपा ?''

संसार के समस्त सौंदर्य का रहस्य यही है। संसार के चित्ताकर्षक पदार्थों के सारे जादू का यही भेद है। हे मनुष्यो ! तुम आप ही अपनी दृष्टि से सब वस्तुओं को मनोहर बनाते हो। प्रेम के नेत्रों से देखते हुए तुम आप ही अपनी प्रभा किसी वस्तु पर डालते हो और फिर उस पर आसक्त हो जाते हो।

यूनान के पौराणिक इतिहास में ईको की कथा हमें पढ़ने को मिलती है। वह अपनी ही प्रतिच्छाया पर मोहित हो गयी थी। सब सुंदरताओं का यही हाल है। वे केवल आपके अंतर्गत स्वर्ग अर्थात् आत्मा की ही प्रतिमा हैं। वे केवल आपकी प्रतिच्छाया हैं, और कुछ भी नहीं। जब यह बात है तो अपनी ही छाया के पीछे दौड़ना व हैरान होना कितनी मूर्खता है !

अपना ही सिर पकड़िये

एक बच्चे ने अभी घुटनों के बल चलना सीखा ही था। उसने अपनी ही छाया देख के समझा कि 'यह तो कोई विचित्र वस्तु है।' बच्चे ने छाया का सिर पकड़ना चाहा, वह उसकी ओर रेंगने लगा। छाया भी रेंगने लगी। इधर बच्चा खिसका, उधर छाया खिसकी। छाया का सिर पकड़ने में असमर्थ होकर बच्चा रोने लगा। इतने में माता को उस पर दया आयी और उसने बच्चे के हाथ से उसीका सिर छुआ दिया।

छाया का सिर भी हाथ में आ गया। अपना ही सिर पकड़िये तो छाया भी पकड़ में आ जाती है। स्वर्ग और नरक आप ही के भीतर हैं। शक्ति, आनंद और जीवन का मूल आपके भीतर है। मनुष्यों, प्रकृति और राष्ट्रों का ईश्वर आपके भीतर है।

हे संसार के मनुष्यो ! सुनो, सुनो, यह पाठ मकानों की छतों से, बड़े-बड़े नगरों के चौराहों से, सब राजमार्गों से उच्च स्वर में घोषित होने योग्य है। यदि तुम किसी वस्तु को प्राप्त करना चाहते हो, किसी पदार्थ की अभिलाषा करते हो, तो छाया के पीछे न पड़ो। अपना ही सिर छुओ। अपने ही भीतर प्रवेश करो। यह अनुभव होते ही आपको जान पड़ेगा कि तारे आप ही के हस्तकौशल (दस्तकारी) हैं। आप देखेंगे कि प्रेम की सभी वस्तुएँ, समस्त मनोहर और लुभानेवाले पदार्थ आपके ही प्रतिबिम्ब या छायामात्र हैं।

ॐ ॐ चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्।

आत्मदीया जगाने का पर्व : दीपावली

- पूज्य बापूजी

(दीपावली पर्व : २५ से २९ अक्टूबर)

धनतेरस से लेकर द्वितीया अर्थात् भाईदूज तक के ५ दिवस शरीर, मन और मति को स्वस्थ रखने की बातें जानने और आत्मदीया जगाने वाले पर्व के दिन हैं।

धनतेरस

इस मायावी जगत में धन, ऐश्वर्य पाने के लिए धनतेरस को गाय व लक्ष्मी की पूजा की जाती है। यमराज की प्रसन्नता पाने एवं अकाल मृत्यु टालने के लिए इस दिन प्रांगण में दीपदान करना, नैवेद्य धरना।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी भगवान धन्वंतरि का अवतरण दिवस है। श्रीमद्भागवत के अनुसार भगवान के २४ अवतारों में से यह १२वाँ अवतार माना जाता है। भगवान कहते हैं : ''जब समुद्र-मंथन हुआ था तो धनतेरस के दिन मैं अमृत का घड़ा लेकर धन्वंतरि के रूप में प्रकट हुआ था। उस अमृत के घड़े को देखते-देखते मेरे हर्ष के आँसू की एक बूँद उस घड़े में गिरी। उससे तुलसी प्रकट हुई थी। इस दिन जो तुलसी व लक्ष्मीजी की पूजा व आदर करेगा वह धन-धान्य तथा आरोग्य पाकर सुखी रहेगा।''

नरक चतुर्दशी

इस दिन नरकासुर को श्रीकृष्ण ने मारा था, इस खुशी में दक्षिण भारत के लोग दिवाली मनाते हैं। नरक चतुर्दशी व दिवाली की रात्रि को जागरण व जप विशेष फलदायी होते हैं। नरक चतुर्दशी को मंत्र को चैतन्य की विशेष प्राप्ति होती है, मंत्र की सिद्धि होती है। अगर इस दिन अपने मंत्रों का जप नहीं करते हैं तो वे मलिनता को प्राप्त होते हैं, उनका प्रभाव कम हो जाता है। अगर इस दिन कोई गलती से भी सूर्योदय के बाद उठता है तो वर्षभर के उसके पुण्यों व सत्कर्मों का प्रभाव कमजोर हो जायेगा। लेकिन सूर्योदय से पूर्व स्नान कर लेता है तो उसके सत्त्व की अभिवृद्धि होगी। और **सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं...** सत्त्वगुण से तात्त्विक ज्ञान, शुद्ध ज्ञान जगमगाता है। परमात्मा के साथ एकाकार होने के लिए नरक चतुर्दशी व दीपावली की रात्रि बड़ी हितकारी होती है। इन दिनों में -

* सरसों के तेल का दीया जलाना आँखों के लिए हितकारी है।

* गोमूत्र* पानी की बाल्टी में डालकर स्नान किया जाय तो गंगोदक-स्नान करने का फल होता है और रोमकूपों को लाभ पहुँचता है।

* गौ-गोबर और गोमूत्र का मिश्रण लगा के नहाना पुण्यदायी और वायु व कफ शामक है।

दीपावली

दिवाली, लक्ष्मी-पूजन से जुड़े पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक अनेक-अनेक प्रसंग हैं। इनका तात्पर्य यह है कि इस दिन नया संकल्प करें कि 'हर रोज इतनी माला करूँगा ही, इतनी देर मौन रहूँगा, श्री योगवासिष्ठ महारामायण व गुरुगीता का पाठ करूँगा ही।' गुरुगीता का पाठ करने से शत्रुओं का मुँह बंद हो जाता है, दोष-पाप नष्ट हो जाते हैं - ऐसे शिवजी के वचन हैं। तो जप, पाठ, मौन आदि का नियम ले के संकल्पवान, दृढ़निश्चयी बनना चाहिए।

दिवाली को रुपयों का, बहीखाते (account

* गोमूत्र न प्राप्त हो सके तो आश्रम की समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध गोमूत्र अर्क का उपयोग कर सकते हैं।

गौ-प्रेम से जुड़े पूज्य बापूजी के कुछ प्रेरणाप्रद हृदयस्पर्शी प्रसंग

[गोपाष्टमी (४ नवम्बर) पर विशेष]

पूज्य बापूजी ने न केवल गौ-महिमा जन-जन तक पहुँचायी है बल्कि गौ-सेवा के अनेक कार्य भी किये हैं। आज पूज्यश्री के मार्गदर्शन में देशभर में ४५ से अधिक गौशालाएँ चल रही हैं, जिनमें ९००० गायें हैं।

अपनी अति व्यस्त दिनचर्या में से भी समय निकालकर गायों के चारा-पानी, रखरखाव आदि का ध्यान रखना, कई बार गौशालाओं में जाकर स्वयं अपने हाथों से गायों की सेवा करना, गौ-पालकों को प्रोत्साहित करना आदि कार्य बापूजी के गौ-प्रेम को दर्शाते हैं। संतश्री का यह दैवी कार्य सभीके लिए अत्यंत प्रेरणाप्रद साबित हुआ है। पूज्य बापूजी के साधक एवं बापूजी को जानने-माननेवाले समस्त अनुयायी सदैव गौ-सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।

पूज्य बापूजी के जीवन प्रसंग

यहाँ ऐसे ही कुछ प्रसंग बता रहे हैं श्योपुर गौशाला के गजानंद भाई, जो सन् २००० से गायों की सेवा में रत हैं तथा जिन्हें सन् १९८६ से पूज्य बापूजी का सत्संग-सान्निध्य प्राप्त होता रहा है :

''एक भी गाय कत्लखाने नहीं जानी चाहिए''

सन् २००० में राजस्थान में भीषण अकाल पड़ा था। उस समय निवाई (जि. टोंक, राज.) व आसपास के गाँवों के लोग पानी एवं घास के अभाव में गायों को छोड़ देते थे तो कत्लखानेवाले उन्हें ले जाते थे। निवाई के कुछ साधकों व अन्य लोगों ने जब गायों की ऐसी स्थिति देखी तो उनसे रहा न गया। वे यहाँ-वहाँ घूमनेवाली बेसहारा गायों को लेकर एक जगह रखते और उनके खाने-पीने की व्यवस्था करते। गायों की संख्या रोज बढ़ते-बढ़ते १४६० तक पहुँच गयी। इतनी सारी गायों की व्यवस्था करना व इतना खर्च करना उनके लिए सम्भव नहीं था। इलाज आदि के अभाव में कई गायें मर भी जाती थीं।

पूज्य बापूजी तक जब यह बात पहुँचायी तो गुरुदेव ने तुरंत गायों की सेवा में लगने का आदेश दिया। उस समय मैं दोंडाईचा (महा.) आश्रम में था। गुरुदेव ने मुझे बुलवाया, बोले : ''तुम लोग जाकर गायों की सेवा में लग जाओ। एक भी गाय कत्लखाने नहीं जानी चाहिए। पैसा जितना चाहिए भेज देंगे। अच्छे-से-अच्छा डॉक्टर लाओ। पशु-आहार लाओ और गायों को खिलाओ।''

गुरुदेव के निर्देशानुसार हम कुछ भाई निवाई पहुँचे और गायों को चारा-पानी व चिकित्सा उपलब्ध करायी। आगे चलकर निवाई में एक भव्य गौशाला का निर्माण हुआ, जिसका उद्घाटन १४ जून २००० को पूज्य बापूजी के करकमलों से हुआ।

बारिश के रूप में बरसी गुरुकृपा

निवाई में करीब २१०० गायें हो गयी थीं और एक ही बाड़ा था। इतनी गायों को एक साथ रखकर व्यवस्था करना मुश्किल होता था। पता चला कि निवाई से २१० कि.मी. दूर श्योपुर के पास के जंगल में गायों को रखने की व्यवस्था हो सकती है तो हम ८-१० आश्रमवासी भाई निवाई से १४०० गायें लेकर वहाँ के लिए निकल पड़े। हम हर रोज २० से २५ कि.मी. चलते और शाम होने पर किसी गाँव में रुक जाते। कई जगह गाँव के लोगों को चिंता होती कि 'ये यदि गायों को छोड़कर चले गये तो

विद्यार्थी संस्कार

वह एक दिन जरूर ऊँचाई को छूता है जो...

सावली गाँव (जि. वडोदरा, गुजरात) का गरीब बालक चुनीलाल तीव्र बुद्धि का था। विद्यालय में चुनीलाल के साथ पढ़नेवाले कई लड़के पैसे लाते और छुट्टी में पास की दुकानों से सेव-मुरमुरे आदि कुछ-न-कुछ खरीद के खाया करते थे। परंतु अपने साथ पैसे ले जा सके ऐसी चुनीलाल के घर की परिस्थिति नहीं थी। उसने अपने मन को समझा-बुझाकर काबू में रखा था परंतु फिर भी एक दिन उसके मन में लालच पैदा हो गया। उसने माँ द्वारा मजदूरी करके लाये गये पैसों में से दो पैसे चुराये और दोस्तों के साथ सेव-मुरमुरे खरीद के खाये।

इससे चुनीलाल की जिह्वा को कुछ क्षणों के लिए सुखाभास तो मिला लेकिन थोड़े ही समय बाद उसकी अंतरात्मा ने लानत बरसाना चालू कर दिया : 'चुनीलाल ! तेरी माँ कड़ी मेहनत-मजदूरी करके जो पैसे कमाती है, उन्हें चुराने की हिम्मत तूने किसलिए की ? केवल दो-चार मिनट के स्वाद के मजे के वश होकर ही न ? क्या यह तुझे शोभा देता है ?'

घर आकर वह गर्दन झुका के माँ के सामने खड़ा हो गया।

माँ ने पूछा : ''चुनिया ! तेरा चेहरा इतना उतरा क्यों है ?''

डरते-डरते चुनीलाल ने कुछ भी छिपाये बिना सब बता दिया। सुनकर माँ को वैसे तो आनंद हुआ कि 'मेरे चुनिया ने ईमानदारी से अपनी भूल स्वीकार की है और उसे उसका पछतावा हुआ है।' फिर भी वह पुनः इस प्रकार की गलती न करे, उसका भविष्य खराब न हो इसलिए माँ ने थोड़ी नाराजगी भी जतायी और फिर ईमानदारी दिखाने के लिए प्रेम भी किया। चुनीलाल ने अपनी गलती स्वीकार कर माँ को बताया तो उसका मन हलका हो गया और ऐसी भूल दुबारा न करने का उसने दृढ़ निश्चय किया।

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''बड़ी-से-बड़ी गलती हो जाय, बड़े-से-बड़ा अपराध हो जाय लेकिन व्यक्ति में अपनी गलती मानने की तथा निकालने की तत्परता है तो वह एक दिन जरूर ऊँचाई को छुएगा और बड़े-से-बड़े अच्छे काम करता है किंतु अपनी गलती न मानता है, न निकालता है तो वह एक दिन जरूर पतन की खाई में गिरेगा।''

यही बालक चुनीलाल आगे चल के अपने सद्गुरु के कृपा-प्रसाद को आत्मसात् कर 'पूज्य मोटा' के नाम से प्रसिद्ध संत हुए। सूरत में तापी-तट पर वरियाव रोड पर स्थित उनके आश्रम के पास ही अपना आश्रम (संत श्री आशारामजी आश्रम) है। ❑

शहडोलनिवासी श्री गुरुबख्शराय जैसिंघानी के देहावसान पर पूज्य बापूजी का संदेश

हम श्रद्धांजलि नहीं, ब्रह्मांजलि देते हैं

गुरुबख्शराय जैसिंघानी महाबहादुर ने चार-साढ़े चार साल पीछे पड़ के वहाँ (शहडोल में) आश्रम बनाने के लिए मेरे को राजी कर लिया, जमीन भी जन-कल्याण के लिए अर्पण कर दी। आश्रम में भी सेवा की। इस बहादुर में ऐसे गुण थे कि... एक गुण के लिए कवि लोग गाते हैं कि

जननी जने तो भक्त जन या दाता या शूर।
नहीं तो रहना बाँझ ही, मत गँवाना नूर॥

लेकिन ये भक्ति में भी... आखिरी श्वास तक मेरे फोटो को देखते-देखते भगवद्-तत्त्व में विलय हुए। तो भक्त भी पूरे-के-पूरे, दाता भी पूरे-के-पूरे और शूरवीर भी पूरे-के-पूरे! ऐसों की तो माता धन्य है, पिता धन्य है!

संत मरे क्या रोइये, वे जायें अपने घर।

गुरुबख्श संतत्व को उपलब्ध हुए हैं। सेवा करने में भी पीछे नहीं हटे और आश्रम बनाने में, सँभालने में भी पीछे नहीं हटे। ऐसे पवित्रात्मा को हम हृदयपूर्वक श्रद्धाजलि तो नहीं देंगे, उनको तो ब्रह्मांजलि देंगे - तू ब्रह्म है, तू चैतन्य है, तू अमर है, तू शाश्वत है...।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना॥

गीता का यह श्लोक इनकी पुण्याई के लिए और इनकी आगे की यात्रा के लिए पर्याप्त है।

तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनंत फल, कहत कबीर विचार॥

ऐ शहडोलनिवासियो! आप सचमुच में भाग्यशाली हो कि इस बहादुर वीर ने आपको तीर्थधाम दे दिया और सद्गुरु का सत्संग-सान्निध्य भी दिया। ये भगवान के रास्ते जाने में बहादुर, तितिक्षा सहने में बहादुर और आखिरी समय में मेरे फोटो के आगे ध्यान लगाते-लगाते सिर झुका के यात्रा कर ली, परम बहादुरी है!

मधुर संस्मरण

शहडोल (म.प्र.) के ७२ वर्षीय साधक श्री गुरुबख्शराय जैसिंघानी (दादा) का शरीर ४ सितम्बर को शांत हुआ। पुण्यशीला माता राधाबाई एवं पुण्यात्मा पिता मोरूमलजी के सुपुत्र गुरुबख्शरायजी का जीवन नियमनिष्ठा, नित्य सत्संग-श्रवण, दानशीलता, गुरुप्रेम, स्वयं अमानी रहकर दूसरों को मान देना, जरूरतमंदों की सेवा आदि सद्गुणों से ओतप्रोत था। दादा दानी तो थे पर सदैव पात्रता का खयाल रखकर दान करते थे। उनमें भावना और विवेक का अद्भुत समन्वय था।

'इनके जैसा दाता नहीं और मेरे जैसा बाबा नहीं'

दादा ने जब पूज्य बापूजी के प्रत्यक्ष दर्शन तक नहीं किये थे, तभी उन्होंने निश्चय कर लिया था कि 'शहडोल के जमुआ ग्राम में स्थित अपनी १२ एकड़ जमीन पूज्य बापूजी के दैवी सेवाकार्यों हेतु अर्पण करनी है।' दादा ने यह बात बापूजी के चरणों में रखी तो पूज्यश्री ने अस्वीकार कर दी। विभिन्न सत्संगों में पहुँचकर दादा प्रार्थना दोहराते रहे। जबलपुर में दादा ने कहा: ''बापूजी! उस जमीन पर हमने सत्संग शुरू कर दिया है।''

पूज्य बापूजी प्रसन्न होकर बोले: ''हमने जमीन ली भी नहीं और तुमने सत्संग शुरू कर

₹ ७०
२० कैप्सूल्स

शुद्ध शिलाजीत कैप्सूल (१००% शुद्ध)

शुद्ध शिलाजीत शरीर के सभी अंगों को बल व मजबूती प्रदान करती है । यह युवा व वृद्ध - दोनों अवस्थाओं में ऊर्जा देनेवाला तथा शक्ति, बुद्धि व स्मृति वर्धक एवं हड्डियों को मजबूत करनेवाला उत्तम रसायन है । शारीरिक कमजोरी, मूत्र-संबंधी रोग, खून की कमी (anaemia), पथरी, जोड़ों का दर्द एवं हृदय की पीड़ा आदि रोगों में लाभदायी है । बाजारू विज्ञापन देखकर अपनी जेब खाली न करें । यह कैप्सूल शुद्ध, सात्त्विक, सस्ता व विश्वसनीय है ।

शुद्ध हीरा भस्मयुक्त वज्र रसायन टेबलेट

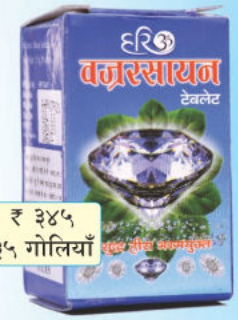

₹ ३४५
३५ गोलियाँ

ये गोलियाँ देह को वज्र के समान दृढ़, तेजस्वी, कांतिमान तथा सुंदर बनानेवाली हैं । ये त्रिदोषशामक, जठराग्नि व वीर्य वर्धक एवं दीर्घायुष्य-प्रदायक हैं । मस्तिष्क को पुष्ट कर बुद्धि, स्मृति तथा इन्द्रियों की कार्यक्षमता बढ़ाती हैं । अस्थि व प्रजनन संस्थान हेतु विशेष लाभदायी हैं । कोशिकाओं के निर्माण में सहायक हैं । ये हृदयरोग, लकवा (paralysis), सायटिका, संधिवात, कमजोरी, दमा, आँखों के रोग, गर्भाशय व मस्तिष्क संबंधी रोग आदि में शीघ्र लाभदायी हैं । नपुंसकता को दूर करने के लिए यह अद्वितीय औषधि है ।

₹ ८०
५०० ग्राम
₹ १६०
१ किलो

शरीर और बुद्धि के सर्वांगीण विकास के लिए ५६ से भी अधिक बहुमूल्य वनौषधियों से युक्त च्यवनप्राश

यह बल, वीर्य, स्मरणशक्ति व बुद्धि वर्धक है । बुढ़ापे को दूर रखता है व भूख बढ़ाता है । पुराना बुखार, दुर्बलता, शुक्रदोष, पुरानी खाँसी तथा फेफड़ों, मूत्राशय व हृदय के रोगों में विशेष लाभकारी है । यह दीर्घायु, चिरयौवन, प्रतिभाशक्ति देनेवाला है । स्वस्थ या बीमार, बालक, युवक, वृद्ध - सभी लोग सब ऋतुओं में इसका सेवन कर सकते हैं ।

₹ १०५
५०० ग्राम
₹ १९९
१ किलो

च्यवनप्राश (केसरयुक्त)

सोना, चाँदी, लौह व ताँबा सिद्ध जल में उबले हुए वीर्यवान आँवलों में ५६ से भी अधिक बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के साथ चाँदी, लौह, बंग व अभ्रक भस्म एवं शुद्ध केसर मिलाकर बनाया गया विशेष च्यवनप्राश !

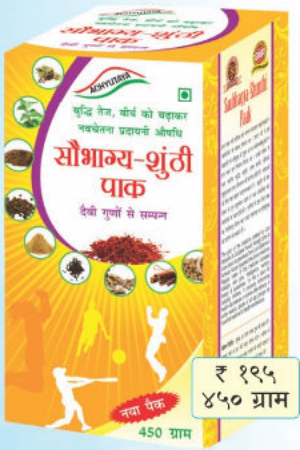

₹ १९५
४५० ग्राम

सौभाग्य शुंठी पाक

सौभाग्य शुंठी पाक एक दिव्य औषधि है, जिसकी महिमा भगवान शिवजी और ब्रह्माजी ने भी गायी है । यह उत्तम बलवर्धक है । इसके सेवन से ८० प्रकार के वातरोग, ४० प्रकार के पित्तरोग, २० प्रकार के कफरोग, ८ प्रकार के ज्वर, १८ प्रकार के मूत्ररोग तथा नाक, कान, मुख, नेत्र व मस्तिष्क के रोग एवं वस्तिशूल, योनिशूल व अन्य अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं ।

₹ २१०
४५० ग्राम

आयु, आरोग्य एवं पुष्टि वर्धक अश्वगंधा पाक

यह पुष्टि व वीर्य वर्धक, स्नायु एवं मांसपेशियों को ताकत देनेवाला तथा कद व मांस बढ़ानेवाला है । नसों एवं धातु की कमजोरी, मानसिक तनाव, याददाश्त की कमी व अनिद्रा दूर करता है । दूध के साथ इसका सेवन करने से शरीर में लाल रक्तकणों व कांति की वृद्धि होती है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रम की समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त कर सकते हैं । रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क करें : (०७९) २७५०५०१०/११, ई-मेल : contact@ashramestore.com अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com

'ऋषि प्रसाद' सम्मेलनों व अभियानों के कुछ दृश्य

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2018-20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)
Licence to Post Without Pre-payment.
WPP No. 08/18-20
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2020)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Oct 2019

तेजस्वी युवा शिविरों में गुरुसेवा, गुरुभक्ति का भाव दृढ़ करते युवा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

पूज्य बापूजी के जीवन, उपदेश और योगलीलाओं पर आधारित आध्यात्मिक मासिक विडियो मैगजीन

ऋषि दर्शन

ऋषि दर्शन अब अल्प मूल्य में सहजता से पायें... औरों को भी लाभ दिलाकर उनका मंगल करें।

डी.वी.डी. तकनीक प्रचलन-बाह्य होने से ऋषि दर्शन अब केवल ऑनलाइन संस्करण में ही उपलब्ध हो पायेगी।
डी.वी.डी. संस्करण को ई-संस्करण में परिवर्तित कराने पर पाइये शेष सदस्यता से ४ गुना अधिक महीनों की सदस्यता !

e-Rishi Darshan (मोबाइल एप - "Rishi Darshan" में) सदस्यता शुल्क

भारत में :	वार्षिक - ~~₹ ५५०~~ ₹ १००	द्विवार्षिक - ₹ २००	पंचवार्षिक - ~~₹ १९००~~ ₹ ४००
विदेश में :	वार्षिक - ~~US $ 50~~ US $ 20	द्विवार्षिक - US $ 40	पंचवार्षिक - ~~US $ 200~~ US $ 80

सम्पर्क : ९८९८२२०६६६, (०७९) २७५०५०१०/११ Email: contact@rishidarshan.org visit: www.rishidarshan.org

सदस्य बनानेवाले ध्यान दें : e-Rishi Darshan के लिए सदस्यता रसीद बुक न भरें।

नववर्ष के उपहार वर्ष २०२० के वॉल कैलेंडर

''इनमें ऐसी प्रेरणाएँ और सूत्र हैं जिनसे मन में उत्साह रहेगा, व्यवहार में सौहार्द रहेगा, घर में सुख-शांति बढ़ेगी, नित्य शुभ दर्शन होंगे - भगवान के भी, संतों के भी। बड़े प्रेरणादायी हैं, सुखदायी हैं, सस्ते भी हैं !'' - पूज्य बापूजी

२५० या इससे ज्यादा वॉल कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम, फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं। स्वयं के साथ अपने मित्रों, परिचितों को भी अवश्य लाभ दिलायें। सम्पर्क : अहमदाबाद मुख्यालय - (०७९) ६१२१०७३२/८३२